SEWA

ICIMOD

जनवकालत की रणनीतियाँ और कार्यशैलियाँ

हिन्दु कुश - हिमालय क्षेत्र में सामुदायिक संगठनों के लिए जनवकालत की रणनीतियों पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु एक मैन्युअल

About the Organisations

SEWA

Society for Ecology, Water- resources and Afforestation (SEWA) is a non government organisation based at Mussoorie, in the hill state of Uttaranchal in India. The organisation aims to socially and economically empower some of the most marginalised and deprived mountains communities. In this direction research and training are the key activities of SEWA and natural resource management, women's empowerment and people's participation in local self governance are the primary areas of intervention.

ICIMOD

The International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD) is an independent 'Mountain Learning and Knowledge Centre' serving the eight countries of the Hindu Kush-Himalayas - Afghanistan , Bangladesh , Bhutan , China , India , Myanmar , Nepal , and Pakistan - and the global mountain community. Founded in 1983, ICIMOD is based in Kathmandu, Nepal, and brings together a partnership of regional member countries, partner institutions, and donors with a commitment for development action to secure a better future for the people and environment of the Hindu Kush-Himalayas. The primary objective of the Centre is to promote the development of an economically and environmentally sound mountain ecosystem and to improve the living standards of mountain populations.

जनवकालत की रणनीतियाँ और कार्यशैलियाँ

(Advocacy Strategies and Approaches)

हिन्दु कुश – हिमालय क्षेत्र में सामुदायिक संगठनों के लिए जनवकालत की रणनीतियों पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु एक *मैन्युअल*

(A Training of Trainers Manual on Advocacy Strategies for Community-based Organisations in the Hindu Kush-Himalayas)

सोसाइटी फॉर इकोलॉजी वाटर–रिसॉर्सेज एंड अफौरेस्टेशन्
मसूरी, उत्तरांचल, भारत

एवं

इन्टरनैशनल सैन्टर फॉर इन्टीग्रेटेड माउन्टेन् डेवलपमेंट
काठमांडु, नेपाल

अगस्त, 2005

This publication is a full text translation of the manual 'Advocacy Strategies and Approaches, A Training of Trainers Manual on Advocacy Strategies for Community-based Organisations in the Hindu Kush-Himalayas' originally published by the International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD) in Kathmandu, Nepal, in 2005 with ISBN 92-9115-031-2.

Editorial team for original English publication

Nani Ram Subedi (Lead Author)
Rosemary A. Thapa (Consultant Editor)
Dharma R. Maharjan (Technical Support and Graphic Design)

Copyright © 2005

Society for Ecology, Water-resources and Afforestation (SEWA)
International Centre for Integrated Mountain Development
All rights reserved

ISBN 92-9115-157-2

Translated into Hindi by

Anmol Jain
Neha Jain

Hindi translation published by

Society for Ecology, Water-resources and Afforestation (SEWA)
Long Sight, Kulri
Mussoorie, India
Tel: ++91-135-2632580

Printed and bound in India by

Microsoft Technoprint (I) Pvt. Ltd.
Dehradun, India

If extended parts of these materials are used in formal training programmes, please credit ICIMOD as appropriate.

The views and interpretations in this paper are those of the authors. They are not attributable to the International Centre for Integrated Mountain Development (ICIMOD) or Society for Ecology, Water-resources and Afforestation (SEWA) and do not imply the expression of any opinion concerning the legal status of any country, territory, city, or area of its authorities, or concerning the delimitation of its frontiers or boundaries.

प्रस्तावना

ICIMOD का यह मानना है कि पर्वतीय क्षेत्रों के स्थाई विकास को बढ़ावा देने के लिए विकास की प्रक्रियाओं में नागर समाज संगठनों की भागीदारी महत्वपूर्ण है। इस बात के प्रमाण मिल रहे हैं कि सम्पूर्ण हिन्दु कुश हिमालय क्षेत्र में नीति निर्धारण की प्रक्रियाओं में पर्वतीय समुदायों की उपेक्षा की जा रही है। इस पक्षपातपूर्ण और सम्भावित रूप से ज्वलंत अन्तर को मिटाने के लिए समुदायिक संगठनों की क्षमता वृद्धि की आवश्यकता है, जिससे कि पर्वतीय लोगों की जरूरतों एवं विचारों को नीति निर्धारकों एवं विकास संस्थानों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। सन 2002 में, ICIMOD ने *'रीजिनल प्रोग्राम फॉर कैपेसिटी बिल्डिंग आफ कम्युनिटी बेस्ड आर्गनाइजेशनस् इन एडवोकेसी स्ट्रेटजीस् इन् द हिन्दु कुश हिमालयास* नामक एक नयी गतिविधि की शुरूआत की। इसके लिए *इंटरचर्च आर्गनाइजेशन् फॉर डैवलपमेंट कोअपरेशन्* नामक नीदरलैण्ड की एक संस्था ने वित्तीय सहायता प्रदान की है।

पर्वतीय समुदायों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करने के उद्देश्य से ICIMOD ने उन संस्थाओं की क्षमता वृद्धि की है जो कि अपने–अपने क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन से जुड़े मुद्दों पर विज्ञान और कानून सम्मत जनवकालत कर रहे हैं। अब तक यह देखा गया है कि अगर ऐसे संस्थान पर्याप्त शोध पर आधारित तरीकों का उपयोग करते हैं तो वह पर्वतीय समुदायों के अधिकारों के लिए बहुत ही प्रभावशाली ढंग से जनवकालत कर सकते हैं। किन्तु, इस क्षेत्र की स्वंय सेवी संस्थाओं और जन आधारित संगठनों को जनवकालत की तकनीकों के बारे में पर्याप्त जानकारी और स्पष्टता नहीं है। इसके अलावा वैज्ञानिकों द्वारा मान्यता प्राप्त तथ्यों का भी आभाव है। इसलिए, ICIMOD इन संस्थाओं में हिन्दुकुश हिमालय क्षेत्र में जनवकालत के सिद्धान्त, तरीकों और तकनीक से सम्बन्धित विषयों पर कुछ चुनिन्दा संस्थाओं की क्षमता विकास के लिए कार्यरत है। इन संस्थाओं को सामाजिक, आर्थिक और *जैण्डर* पर आधारित असमानताओं को सम्बोधित करने की रणनीतियां बनाने में जनवकालत की भूमिका के लिए आवश्यक जानकारी का विस्तार करना भी क्षमता विकास का उद्देश्य है। इस दिशा में जनवकालत का कार्यक्रम बांग्लादेश, भारत, नेपाल और पाकिस्तान में 40 से भी अधिक नागर समाज *नेटवर्क* और स्वंय सेवी संस्थाओं के साथ भागीदारी में क्रियान्वित किया जा रहा है।

यह *ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर मैन्युअल* हिन्दु कुश–हिमालय क्षेत्र में जनवकालत की रणनीतियों पर सामुदायिक संगठनों के संभाव्य प्रशिक्षकों के प्रयोग हेतु बनाया गया है। यह प्रशिक्षक इस मैन्युअल का प्रयोग जनवकालत की रणनीतियों पर स्थानीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए भी कर सकते हैं। इस किताब के साथ एक *'रिसोर्स मैन्युअल'* भी प्रकाशित की गई है। जिसमें इस किताब में उल्लेखित विषयों पर और अधिक जानकारी प्रदान की गयी है। यह *ट्रेनिंग मैन्युअल* सूचनाबद्ध और कानूनी तरीके से किये गये जनवकालत के प्रयासों के द्वारा पर्वतीय समुदायों के विचारों और जरूरतों को सामने लाने में सामुदायिक संगठनों और उनके *नेटवर्कों* के लिए उपयोगी साबित होगी। यह दोनों, *रिसोर्स मैन्युअल* और *ट्रेनिंग मैन्युअल*, उन सामान्य श्रोताओं के लिए भी रूचिकर होगी जो कि पर्वतीय क्षेत्रों में लोकाधारित और स्थाई विकास को बढ़ावा देने के पक्ष में है। इसके अलावा, एक *माउन्टेन लर्निंग एण्ड नालिज सेन्टर* के रूप में, ICIMOD का यह लक्ष्य है कि अपने सहभागियों के साथ मिलकर जनवकालत एवं नीति निर्धारण के लिए वैज्ञानिक जानकारी का विकास करें। यह जानकारी का स्रोत, पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों में गरीबी और असुरक्षा के उन्मूलन पर आधारित नीतियों की वकालत करने वालों के लिए उपयोगी होगा।

डा. जे. गैब्रियल कैम्पबेल
(Dr. J.Gabriel Campbell)
डायरेक्टर जनरल
ICIMOD

आभार

इस *मैन्युअल* की प्रेरणा नवम्बर, सन् 2003 में चटगांव में आयोजित *रीजनल प्लानिंग वर्कशाप ऑन कैपेसिटी बिल्डिंग ऑफ सी.बी.ओस् इन एडवोकेसी स्ट्रेटेजीस इन द हिन्दु कुश–हिमालयास्* के दौरान हुई चर्चा से मिली थी। इस कार्यशाला से यह निष्कर्ष निकला था कि जनवकालत के सम्भावित प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण की तुरन्त आवश्यकता है। मैं इस कार्यशाला के सभी सहभागियों का धन्यवाद करना चाहूंगा जिन्होंने इस *मैन्युअल* को बनाने के लिए महत्वपूर्ण अन्तदृष्टियां दी और मुझे प्रोत्साहित किया।

यह *मैन्युअल* पहले *ड्राफ्ट* रूप में तैयार की गयी थी और मार्च और जुलाई, सन् 2004 में जनवकालत की रणनीतियों पर सामुदायिक संगठनों के क्षमता निर्माण के लिए काठमान्डु में आयोजित क्षेत्रीय प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यशालाओं में इसका परीक्षण किया गया था। इन कार्यशालाओं के सहभागियों की टिप्पणियों एवं सुझावों के आधार पर इसमें संशोधन किया गया था। मैं, इस *मैन्युअल* को वर्तमान स्वरूप में लाने में मदद करने के लिए, सभी सहभागियों की उत्साही प्रतिक्रिया तथा महत्वपूर्ण सुझावों के लिए धन्यवाद करना चाहूंगा।

इस *मैन्युअल* को बनाने के लिए विभिन्न स्रोतों से विभिन्न तथ्यों एवं सूचनाओं का उपयोग किया गया है। पर्वतीय क्षेत्रों पर आधारित अध्ययन सामग्री तैयार करने हेतु इन सभी में फेरबदल कर इनको पर्वतीय परिपेक्ष के अनुकूल बनाया गया। विशेषतौर पर मैं, *केयर इन्टरनेशनल*[1] द्वारा प्रकाशित *रिसोर्स मैन्युअल 'एडवोकेसी टूल्स एंड गाईडलाइन्स प्रमोटिंग पालिसी चेन्ज'* और *सैन्टर फॉर पापुलेशन एंड डेवलपमेंट एक्टिविटीज* (सी.ई.डी.पी.ए) और *केयर नेपाल*[2] द्वारा प्रकाशित *ट्रेनिंग मैन्युअल 'एडवोकेसी फॉर गुड गवर्नेंस'* का आभार प्रकट करना चाहूंगा। मैं *नैशनल सैन्टर फॉर एडवोकेसी स्टडीज* (एन.सी.ए.एस) पुणे, भारत, का भी आभारी हूं, जिनके जनवकालत के व्यापक संसाधनों से इस *मैन्युअल* को बनाने में बहुत मदद मिली।

जोसेन्टनी जोजफ (josanton@vsnl.com), जो कि जनवकालत के एक अनुभवी प्रशिक्षक हैं और जिन्होंने कई देशों में कार्य किया है, उन्होंने काठमांडु में आयोजित टी.ओ.टी कार्यशालाओं में एक सर्दभ व्यक्ति के रूप में ICIMOD की मदद की। उन्होंने इस *मैन्युअल* की भी विस्तृत रूप से समीक्षा कर इसमें नये विचारों, तरीकों और तकनीकों को सम्मिलित किया। मैं इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए उनका आभारी हूं। इस *मैन्युअल* को बनाने में अन्य कुछ लोगों का भी योगदान रहा है। मैं उन सभी का धन्यवाद करना चाहता हूँ, विशेषतः उधव भट्टाराय, दिलि राम अधिकारी और संतोष शर्मा का जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण विचार और सुझाव व्यक्त किए और जूडिथ अमटजिस का, जिन्होंने सुझाव और विचारों को परिष्कृत किया और भाषा में सुधार किया।

इन्फार्मेशन, मैनेजमेंट, कम्युनिकेशन एंड आउटरीच (आई.एम.सी.ओ) की सम्पादन टीम का सहयोग भी प्रशंसनीय है: धर्म रत्न माहारजन (प्रारूप बनाना), आशा काजी ठाकू (लेखाचित्र पुनः बनाना) रोजमेरी थापा (परामर्श संपादक) और ए. बिएट्रिस मुरे (संपादक) ने मिलकर इस *मैन्युअल* को इस

---

[1] Sprechmann, S.; Pelton, E. Advocacy Tools and Guidelines: Promoting policy change. Copyright (c) 2001 Cooperative Assistance and Relief Everywhere, Inc. (CARE). Used by Permission, CARE International, Atlanta, USA.

[2] CEDPA, CARE Nepal (2003) Advocacy for Good Governance, Kathmandu: Centre for Population and Development Activities (CEDPA) and CARE Nepal (in Nepal).

स्वरूप में प्रकाशित करने में योगदान दिया। मैं, टी.ओ.टी *मैन्युअल* और *रिसोर्स मैन्युअल* के चित्रों को बनाने के लिए, अजीता पांडे को भी धन्यवाद देना चाहूंगा।

अंत में, मैं अनुपम भाटिया, भूतपूर्व कार्यक्रम प्रबंधक, *कल्चर, ईक्विटि, जैन्डर एंड गर्वनन्स* (सी.ई.जी.जी) कार्यक्रम का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनसे मुझे प्रोत्साहन, सलाह तथा सहायता प्राप्त हुई। इसी प्रकार मैं सी.ई.जी.जी. के अन्य भूतपूर्व साथियों का भी शुक्रगुजार हूँ– सुमन राय, फुंसोक सी. शेरिंग, अर्मिला सी. शाक्या और आशीष सिन्हा– जिनका सहयोग और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। आखिर में मैं, गोविन्द श्रेष्ठा और बिष्णू के. सी. को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ।

डा. नानी राम सुबेदी
संयोजक
डीसेन्ट्रलाइजेशन् एंड लोकल गर्वनेन्स
सी.ई.जी.जी. कार्यक्रम

अनुवादक की कलम से

सोसाइटी फॉर इकोलॉजी वाटर–रिसॉर्सेज एंड अफौरेस्टेशन् (सेवा), भारत के उत्तरांचल राज्य में कार्यरत एक स्वंयसेवी संस्था है। *सेवा,* पर्वतीय समाज के उपेक्षित और वंचित तबकों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लिए प्रयासरत है। सेवा का लक्ष्य है पर्वतीय समुदायों को अपनी समस्याओं के मूल कारणों को समझाना तथा उन्हें, उन कारणों के स्वंय ही हल निकालने के लिए जागरूक करना और उनकी क्षमताओं का निर्माण करना। इस दिशा में, शोध एवं प्रशिक्षण सेवा की मुख्य गतिविधियाँ हैं तथा प्राकृतिक संसाधनों का प्रबन्ध, महिला सशक्तिकरण और अभिशासन प्रक्रिया में उपेक्षित वर्गों की भागीदारी संस्था के मुख्य कार्य क्षेत्र हैं। सेवा, अन्य सामुदायिक संगठनों की क्षमता वृद्धि और शोध के माध्यम से सम्बन्धित सरकारी विभागों को ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं से अवगत कराने की दिशा में भी प्रयासरत है।

हमारी संस्था ICIMOD के *ऐक्शन् इनिशएटिव् प्रोजक्ट, "रीजिनल प्रोग्राम फॉर कैपेसिटी बिल्डिंग आफ कम्युनिटी बेस्ड आर्गनाइजेशनस इन एडवोकेसी स्ट्रेटजीस इन द हिन्दुकुश हिमालयास,"* से सन् 2004 में काठमांडु में आयोजित जनवकालत पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यशाला के माध्यम से जुड़ी। इस कार्यशाला में संस्था के एक प्रतिनिधि को भाग लेने का अवसर मिला था। यह प्रशिक्षण अत्यन्त ज्ञानवर्धक तथा व्यवहारिक था। हालांकि, हमें यह भी लगा कि इस तरह के प्रशिक्षण तथा प्रशिक्षण सामग्री को और व्यापक रूप से अन्य सामाजिक संगठनों तक भी पहुंचाने की आवश्यकता है।

इस दिशा में, जब डा. नानी राम सुबेदी ने हमसे प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण की कार्यशाला में प्रयुक्त *ट्रेनिंग मैन्युअल* का हिन्दी अनुवाद करने का अनुरोध किया कि तो हमें अत्यंत हर्ष हुआ। इस अवसर को प्रदान करने के लिए मै अपनी तथा अपनी संस्था की ओर से डा. जे. गैब्रियल कैम्पबेल, डायरेक्टर जनरल ICIMOD और डा. नानी राम सुबेदी का आभारी हूँ।

हिन्दी अनुवाद का मुख्य उद्देश्य है कि उन सामाजिक कार्यकर्ताओं का जनवकालत पर क्षमता विकास किया जा सके जिनको अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है और उस वजह से वें अंग्रेजी में प्रकाशित *मैन्युअल* का लाभ नहीं उठा पा रहे है। हमने इस पुस्तिका के माध्यम से अंग्रेजी में प्रकाशित *मैन्युअल* का सरल शब्दों में अनुवाद करने की चेष्टा की है जिसके कि जनवकालत पर आम समझ बनाई जा सके।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तिका सामुदायिक संगठनों की जनवकालत पर धारणात्मक समझ बनाने में उपयोगी होगी। इस मैन्युअल के अनुवाद में यदि कोई त्रुटि रह गयी हो तो मै सेवा की ओर से क्षमा प्रार्थी हूँ।

अनमोल जैन
सचिव
सोसाइटी फॉर इकोलॉजी वाटर–रिसॉर्सेज एंड अफौरेस्टेशन् (सेवा)

विषय–सूची

प्रस्तावना

आभार

अनुवादक की कलम से

इस मैन्युअल के बारे में 1

प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम 3

प्रथम दिवस – पंजीकरण, प्रारम्भ एवं परिचय 7

सत्र 1 पंजीकरण, प्रारम्भ एवं परिचय 8

सत्र 2 प्रशिक्षण का संदर्भ 19

सत्र 3 सामुदायिक विकास के क्षेत्र में मूलभूत बदलाव 26

सत्र 4 सामाजिक संरचना एवं सत्ता का संतुलन 44

द्वितीय दिवस – जनवकालत एवं उत्तम अभिशासन 61

सत्र 5 जनवकालत – अर्थ एवं उद्देश्य 62

सत्र 6 जनवकालत एवं उत्तम अभिशासन के बीच सम्बन्ध 76

सत्र 7 जनवकालत के चरण – मुद्दे की पहचान एवं विश्लेषण 87

सत्र 8 खुला सत्र 99

तृतीय दिवस – विषयानुसार नीति, परिकल्पना 101

सत्र 9 जनवकालत के चरण – नीतिगत मुद्दे, परिकल्पना एवं लक्ष्य का चयन 102

सत्र 10 जनवकालत के चरण – लक्षित श्रोताओं, सहयोगियों एवं विरोधियों का चयन 107

सत्र 11 जनवकालत के चरण – गठबन्धन निर्माण एवं *नेटवर्किंग* 114

सत्र 12 जनवकालत के चरण – *मीडिया* द्वारा जनवकालत 120

चतुर्थ दिवस – रणनीतियां, भूमिका, बजट एवं अनुश्रवण 127

सत्र 13 जनवकालत के चरण – जनवकालत की रणनीतियों का निर्धारण 128

सत्र 14 जनवकालत के चरण – गतिविधियां, समय सीमा एवं बजट 134

सत्र 15 जनवकालत के चरण – अनुश्रवण एवं मूल्यांकन 140

सत्र 16 जनवकालत की *बॉटम लाईन* और वार्ता की रणनीतियाँ 145

पंचम दिवस – जनवकालत के तरीकों, तकनीक एवं राष्ट्र–स्तर की रणनीतियाँ 151

सत्र 17 जनवकालत के तरीकों – जनवकालत के प्रयासों के लिए आधुनिक तरीके 152

सत्र 18 जनवकालत के तरीकों – जनवकालत के प्रयासों के लिए कुछ तकनीक 157

सत्र 19 राष्ट्रीय स्तर की रणनीतियां – घर लौटने के बाद की योजना 160

सत्र 20 मूल्यांकन एवं समापन 162